दिनांक 10 मई, 2011 को लखनऊ में आल इण्डिया कैफी आजमी अकादमी द्वारा आयोजित समारोह के लिये महामहिम श्री राज्यपाल का उद्बोधन।

———————

देवियों और सज्जनों तथा पत्रकार भाइयों,

आल इण्डिया कैफी आजमी अकादमी द्वारा कैफी आजमी साहब की पुण्य तिथि पर आयोजित इस कार्यक्रम में शामिल होने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ, जिसके लिये मैं इस कार्यक्रम के आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। एक महान एवं प्रगतिशील शायर स्वर्गीय कैफी आजमी जी के नाम से जुड़ी हुई

है यह संस्था। मैं सबसे पहले कैफी आजमी साहब को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

वैसे तो कैफी साहब किसी परिचय के मोहताज नहीं है मगर उनके बारे में कुछ कहे बिना श्रद्धांजलि अधूरी रहेगी। आजमगढ़ के एक छोटे से गाँव मिजवां में जन्में ''अतहर हुसैन रिजवी'' वक्त के लम्बे सफर में ''कैफी आजमी'' बन गये। उनकी शायरी में मजलूमों का दर्द झलकता था। जितना वे शायरी की दुनिया में मशहूर थे उतना ही फिल्मी दुनिया में लोकप्रिय थे। मैं श्रद्धांजलि के तौर पर उनकी पहली नज़्म के दो शेर पढ़ता हूँ, जो उन्होंने ग्यारह साल की उम्र में कही थी–

इतना तो जिन्दगी में किसी की खलल पड़े
हँसने से हो सुकून न रोने से कल पड़े।
जिस तरह हंस रहा हूँ मैं पी पी के गर्म अश्क
यूं दूसरा हंसे तो कलेजा निकल पड़े।

उनकी शायरी सिर्फ शायरी न होकर एक संदेश का जीता जागता दस्तावेंज़ होती थी। मैं आज ही **You Tube** पर उनके द्वारा पढ़ी गई नज्म 'औरत' को देख रहा था। कितना बड़ा पैगाम इस नज्म के जरिये उन्होंने आज की औरतों को दिया है–

''जीस्त (जीवन) के आहंनी (लोहे के) साँचे में ढलना है तुझे।'' ''उठ मेरी जान मेरे साथ ही चलना है तुझे ।''

कैफी साहब बहुआयामी व्यक्ति थे। वे शायर, गीतकार, समाजसेवी और कला के प्रेमी थे । उनका पूरा परिवार भी कला को समर्पित है। शबाना जी भी यहाँ मौजूद हैं। वह अपने पिता के तर्ज पर चलती हैं। कला के साथ–साथ समाज सेवा भी उनकी जिन्दगी का हिस्सा है। जावेद साहब भी कला के संवर्धक हैं और मेरा मानना है कि इन सब का श्रेय कैफी साहब को जाता है। कैफी साहब के लिये एक शेर और पेश करता हूँ–

''कुछ ऐसे मुसाफिर है, जिनके लिये सदियों
राहें भी तरसती हैं, मंजिल भी तरसती है।''

मुझे बताया गया है कि कैफी साहब अपने गाँव मिजवां में शिक्षा के लिये आजीवन प्रयासरत रहे और अच्छी शिक्षा हेतु उन्होंने वहाँ स्कूल और कम्प्यूटर संस्थायें भी स्थापित करायी थीं। इस कार्य हेतु उन्होंने मिजवां वेलफेयर सोसाइटी की स्थापना की थी, जो शिक्षा, किसानों और महिलाओं के उत्थान के लिये कार्य करती थी।

कैफी साहब सिर्फ एक शायर ही नहीं, बल्कि एक अन्जुमन की हैसियत रखते हैं, जिन्होंने अपनी गजलों से शायरी के मैदान में जबरदस्त शोहरत और मकबूलियत हासिल की। शायरी के साथ ही साथ फिल्मी दुनिया में भी अपने नगमों से उनकी एक

खास पहचान बन गई। वे अपने कलाम में बहुत आसान जबान का इस्तेमाल करते थे, जिससे उनके शेर का मकसद आम आदमी भी समझ लेता है। वे अपनी बात को इस अन्दाज में कहते थे, जो सुनने वाले के दिल में उतरती चली जाती थी। सच तो यह है कि उनकी शायरी आम आदमी की जिन्दगी की तरजुमानी करती थी।

वाकई कैफी साहब कमाल के इंसान थे, जिस फील्ड में कदम रखते कामयाबी उनके साथ–साथ चलती। वे जितने लोकप्रिय मंच पर रहे उतने मकबूल वह फिल्मी दुनिया में रहे। उन्होंने अनेक हिन्दी फिल्मों के लिये गीत लिखे जो आज भी सबको याद है। वतन परस्ती का जज़्बा जो उनके दिल में था वह

उनकी कलम बयान करती थी। मैं मिसाल के तौर पर फिल्म 'आंखे' व 'हकीक़त' के तराने की याद दिलाता हूँ–

उस मुल्क की सरहद को कोई छूं नहीं सकता
जिस मुल्क की सरहद की निगहबान हो आंखे।

या देश पर शहीद होने वाले बहादुर सिपाही की तमन्ना जैसे–

कर चले हम फ़िदा जानो तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों।

कैफी साहब बड़ी खूबियों के मालिक थे। उनकी शख्सियत के कई पहलू हैं। मैं ज्यादा कुछ न कहकर एक बार फिर कैफी

साहब को अपनी खेराजे–अकीदत पेश करते हुए अपनी बात खत्म करता हूँ।

मुझे विश्वास है कि यह परम्परा आगे बढ़ेगी और किसी न किसी माध्यम से कैफी साहब का सन्देश आम इंसानों की भलाई के लिये पहुँचता रहेगा।

धन्यवाद –नमस्कार।